कुबेर दत्त

हिमा कौल के शिल्प गाते हैं - आनंदम्!

कवि मित्र पंकज सिंह अक्सर मुझे फ़ोन पर बताते हैं कि शहर में कहां कोई स्तरीय आयोजन हो रहा है, कि कहां किस आर्ट गैलरी में किस युवा या वरिष्ठ चित्रकार-शिल्पकार की प्रदर्शनी चल रही है। मई 2008 का कोई एक दिन था जब पंकज ने फ़ोन पर बताया कि ई. अल्काजी की गैलरी आर्ट हेरिटेज (त्रिवेणी कला संगम परिसर, नयी दिल्ली) में शिल्पकृतियों की एक अनूठी प्रदर्शनी चल रही है। कलाकार हैं हिमा कौल!

नाम सुनते ही मुझ पर दो प्रतिक्रियाएं हुईं। वो दिन भी थे जब हिमा कौल को त्रिवेणी कला संगम-परिसर में शिल्प-रचना करते वक़्त देखता था। अपने काम में तल्लीन, चेहरे पर शान्ति और एक हल्की सी स्मित लिये, एक गोरी चिट्टी कश्मीरी लड़की। प्रचार और दिखावे से दूर। सबके साथ सरल, सामान्य रिश्ता। वरिष्ठ कथाकार अशोक अग्रवाल की अच्छी दोस्त। एक मिलनसार इंसान।... और बाद में यह भी एक सत्य था जिससे सामना हुआ कि प्रौढ़ावस्था तक आते आते, याने लगभग 2004 में एक दिन हिमा को लगा कि उसके हाथ काम करने से इंकार कर रहे हैं। वे अशक्त हो रहे हैं। उंगलियों की पकड़ कमज़ोर हो रही है। और यह सिलसिला रफ़्तार पकड़ता गया। पूरे शरीर ने साथ छोड़ दिया। हिमा का कलाकार तो जीवित रहा पर उसकी कला को रुप-स्वरुप देने वाली देह... लुंजपुंज हो गई। परवश हो गयी। वही हिमा कौल जिसने बड़ी बहन के मानसिक, रूप से विकलांग बेटे गाशा की तीमारदारी में कभी कोई कमी नहीं छोड़ी थी।

हर तरह की चिकित्सा के प्रबन्ध किये गये। कुछ नहीं हुआ। हालांकि प्रयास अभी भी जारी हैं। कवि और हिमा के मित्र विनोद कुमार श्रीवास्तव बताते हैं— ''इन दिनों हिमा के हाथ उसकी हिदायतें नहीं मानते। यही हाल पैरों का है। लेकिन उसकी आँखें सक्रिय हैं। और वे जैसे हिमा की उंगलियों में तब्दील हो गई हैं। वे हवा को माध्यम बनाती हैं और उससे या उसमें शिल्प गढ़ती हैं।''

80 के दशक में विनोद कुमार श्रीवास्तव का परिचय हिमा से हुआ था अशोक अग्रवाल के मार्फत। प्रथम परिचय के दिन हिमा त्रिवेणी कला संगम के बेसमेन्ट में गीली मिट्टी से बावस्ता थी। वह शिल्प निर्माण की प्रक्रिया में उलझी थी। विनोद जी को धीरे-धीरे हिमा के शिल्पों में गहरी दिलचस्पी होती गई।